અનુસરણ - કંઈક અંશે રહે છે. ગ્રીક સાહિત્યમાં epicનું જે મહત્ત્વ હતું તે નવલકથાના સ્વરૂપે યુરોપિયન સાહિત્ય વિશ્વમાં તો પ્રવેશેલું હતું, પણ હવે આપણે ત્યાં પણ આવે છે. આપણે જ્યારે ‘સરસ્વતીચંદ્ર’ કે ‘ગોરા’ કે ‘War and Peace’ની વાત કરીએ છીએ ત્યારે તે નવલકથાઓને ‘epical novels’ કહી બિરદાવીએ છીએ. Sophocles માટે આર્નોલ્ડે જે કહ્યું તે ‘સરસ્વતીચંદ્ર’ના રચયિતા ગોવર્ધનરામ ત્રિપાઠી માટે પણ કહી જ શકીએ ને ? -

He saw life steadily and saw it whole........

ગુજરાતીમાં ગાંધીયુગીન સાહિત્ય સુધી આવતાં આપણને આપણી પ્રશિષ્ટ રચનાઓ મળતી જ રહી છે. અન્ય ભારતીય ભાષાઓમાં પણ પ્રશિષ્ટ રચનાઓ આપનાર વિભૂતિઓ છે જ.

૨૦મી સદીના ઉત્તરાર્ધમાં ગુજરાતી સાહિત્યમાં ઘણાં પરિવર્તનો - સ્થિત્યંતરો આવ્યાં છે. Modernistic આધુનિકતાવાદી - સાહિત્ય જેને કહેવામાં આવ્યું તેને માટે તો પાશ્ચાત્ય ધોરણોને આપણાં સાંસ્કૃતિક પરિવેશને ધ્યાનમાં રાખી કૃતિની પ્રશિષ્ટતા - ઉત્તમતાનાં, ઉચ્ચાવચતાના, મૂલ્યાંકન કરવામાં આવ્યાં છે. પછીના તબક્કાનાં - ગ્રામજીવનનું સાહિત્ય, દલિત સાહિત્ય અને નારી-વિષયક/નારીવાદી સાહિત્ય - ત્રણે વિશે મારી દૃષ્ટિએ નવાં ધોરણો સ્થાપિત થવા જોઈએ, કેટલેક અંશે એ દિશામાં પણ કામ થયું જ છે. દલિતચેતના કે નારીચેતનાની ચિરંતન મુદ્રાવાળી સત્ત્વશીલ રચનાઓ જ classic રૂપે ટકે; માત્ર જયઘોષ કરતું સાહિત્ય કાળના પ્રવાહમાં તણાઈ કાળગ્રસ્ત જ થાય ને ? આ પ્રતિબદ્ધ સાહિત્યમાં સામાજિક અભિજ્ઞતા સાહિત્યિકતા કે કાવ્યત્ત્વમાં ઓગળીને ઊંચી રેખાઓ પ્રાપ્ત કરી શકે.

* * *

ગુજરાતી સાહિત્ય પરિષદ

૨૯મું જ્ઞાનસત્ર

શ્રી સર્વસાધારણ માનવ સેવા ટ્રસ્ટ, મગરવાડા

૨૩-૨૪-૨૫ ડિસેમ્બર-૨૦૧૬

વક્તવ્ય

एन. गोपी

प्रारंभ में ही सुविख्यात गुजराती साहित्य परिषद द्वारा आयोजित ज्ञानसत्र में मुझे अतिथि रूप में निमंत्रित किया उसका में आभार प्रदर्शित करना चाहता हूँ। मुझे लगता है गोदावरी नदी नर्मदा और साबरमती में बह रही है। मुझे लगता है इस वक्त बंगाल के अखातकी लहरें अरब महीसागर के साथ वार्तालाप कर रही हैं।

आप सब जानते है कि तेलुगु दक्षिण भारत की भाषा है। वह द्रविड भाषाकुल से जूडी हुई है। तमिल, तेलुगु, कन्नड और मलयालम आधुनिक द्रविड भाषा है। तमिल के बाद तुरन्त सिर्फ तेलुगु है। में बताना चाहता हूँ कि जिस तरह आधुनिक गुजराती साहित्य बोम्बे प्रेसिडन्सि को छाया में विकसित हुई। तेलुगु भी मद्रास प्रेसिडन्सिकी छाया में विकसित हुई। वो दिन थे तब समुद्रतट जिले के तेलुगु लोग मद्रास प्रेसिडन्सिके शासन के ताबे में थे। तेलंगणा जिला निझामशासन के ताबे में था तबसे वह सहज संस्कार और शिक्षण में पछात रहे था। आप सब जानते है कि अभी अभी में तेलुगु

स्टेट आंध्रप्रदेश और तेलंगणा में विभाजित हुआ है। व्यक्तिगत रूप से में तेलंगणा का हूँ।

मुझे आधुनिक तेलुगु साहित्य का दर्शन कराना अच्छा लगेगा. दो प्रभावशाली सर्जक है जिसका तेलुगु साहित्य ऋणी है। पहले है वीरेसलिंगम (१८८८-१९१९) और दूसरे है गुराजादा अप्पाराव (१८६१-१९१५) । यह दोनो की तुलना आपके अपने नंदशंकर महेता, जिसने पहली नवलकथा 'करणघेलो' (१८६६) लिखी और नरसिंहराव दिवेटिया, जिसने कुसुममाला लीखी । 'राजशेखर चरित्रम्' नामक पहली तेलुगु नवलकथा वीरेसलिंगम् ने १८७८ में प्रकाशित की थी । में कहेना यह चाहता हूँ कि गुजराती नवलकथा तेलुगु नवलकथा से आगे है । तेलुगु की दूसरी प्रतिभा गुराजादा अप्पाराव संभवत: उनकी तुलना, उसकी सामाजिक निसबत और देशभक्ति के अर्थघटन में दलपत-नर्मद की साथ की जा सकती है। गुराजादा कहते है, में quote करता हूं।

A Country is not clod of earth
A Country is people, pulsating and free

यह पंक्तियो तेलुगु प्रजा के लिए विशिष्ट सूत्र हो चूका है,

यह बताना थोडा सा निराशाजनक है कि अन्य भाषाओं की तुलना में गुजराती और तेलुगु के बीच में आदानप्रदान थोडासा कम हुआ है । लेकिन फिर भी में जो कुछ जानकारी उपलब्ध कर सका हूँ वह इस प्रकार है । यह धारा में, तेलुगु कवि कुर्दुथि (मेम मनशुलम) के काव्य का डॉ. रघुवीर चौधरी ने गुजराती में अनुवाद किया है और कवि का कुछ शब्दो में परिचय कराया है। जैसे हम सब

जानते है कि डॉ. रघुवीर चौधरी अभी ज्ञानपीठ से विभूषित हुए है। एक और पुस्तक 'काव्यविश्व' में जया महेता ने बीसमी सदी के दो प्रमुख तेलुगु कवि देवुलपल्ली, क्रिष्ना शास्त्री और श्री श्री का परिचय कराया है। समान रूप से 'कवयित्री विश्व' में करीब दस समकालीन तेलुगु स्त्री कवि की कविता अनूदित हुई है । 'काव्य विश्व' और 'कवयित्री विश्व' के संपादक सुरेश दलाल है । 'कविता' और 'कविलोक' सामयिक द्वारा भी तेलुगु कविओं के काव्यका कुछ अनुवाद आये है। कहानी के बारे में, पुरनाम सुब्रमण्यम शर्मा और वाकाति पांडुरंगराव द्वारा संपादित २७ तेलुगु कहानी के संग्रह की कहानी गुजराती में कुन्दनिका कापडिया ने अनूदित की है।

जब तक तेलुगु नवलकथा का संबंध है, में दो पुस्तक से परिचित हूँ । एक है विश्वनाथ सत्यनारायण, जो भी ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता है लिखित वेयी पाडागुल, वह पहले हिन्दी में अन्य कोई नहीं हमारे प्राईम मिनिस्टर पी. नरसिंहराव द्वारा अनूदित हुई थी और बाद में दो प्रोफेसर चन्द्रकान्त महेता और महेन्द्र हिन्दी संस्करण गुजराती में लाए । दूसरी नवलकथा रंगानायकम्मा की पेकामेदालु जो गुजराती में भारती वैद्य द्वारा 'तास महेल' नाम से अनूदित हुई थी। मेरी नवीनतम जानकारी है कि नवनीत मद्रासी ने तेलुगु से ९ नवलकथा और एक कहानी संग्रह का सीधा अनुवाद १९६७-२००१ दौरान किया है।

में यहाँ आदरणीय श्रोताओं को कहते हुए खुश होता हूँ की मेरा अपना दीर्घकाव्य 'जलगीतम्' गुजराती के नामी कवि रमणीक सोमेश्वर ने 'जलगीत' के नाम से अनूदित किया है। वो काव्य पुस्तक के रूप में प्रकाशित होने से पहले गुजराती वाचको में सुपरिचित हो गया क्यों कि उन्होने काव्यका २७ खंड नियमित रूप में गुजराती

सामयिक में प्रसिद्ध किए । में ओर भी खुश हुआ कि यह अनुवाद भी २००९ का साहित्य अकादमी अेवोर्ड विजेता हुआ ।

में यहाँ विराम लेता हूँ और मेरा कवि रमणीक सोमेश्वर की साथ जो संबंध है वो आपकी साथ Share करुगा । २००१ में हम दोनो अकस्मात से मिले । इस वर्ष में १८ जनवरी के दिन ऑल इन्डिया रेडियो द्वारा भोपाल में सर्व भाषा कवि संमेलन आयोजित हुआ था । में तेलुगुका प्रतिनिधित्व कर रहा था और वे गुजराती का । में सोचता हूं पहली नजर में ही ये मित्रता हूई । १५ जनवरी के दिन पहली वार मिले थे । २५ जनवरी के दिन उन्हो ने भोपाल छोडा । २६ जनवरी जैसे हमे याद है कच्छ में भयावह भूकंप हुआ था । यह करुणान्तिका भी हमें नजदीक लाई । और उसका परिणाम मेरा 'जलगीत' काव्य का गुजराती अनुवाद । यह प्रचलित तथ्य है कि अनुवाद का परिणाम मुख्यत्व सांस्कृतिक रूप से अर्थ का घाटा होता है । सविशेष उन्हों ने पाठ सीधा तेलुगु से अनूदित नहीं किया, किन्तु हिन्दी अनुवाद से किया । इसलिए हम दोंनो ने सोचा की हमें Expert विद्वान की सलाह लेना चाहिए । सद्भाग्य से हमे एसी एक व्यक्ति मिली । प्रो. किशोरीलाल व्यास । तेलंगणा के निझामाबाद में उनका जन्म हुआ था । उनकी मातृभाषा गुजराती थी । और वे ओसमानिया युनिवर्सिटी में प्रोफेसर के रूप में काम कर रहे है । इतना ही नहीं वे सुविख्यात कवि है और मेरे अच्छे मित्र भी । वे अनुवाद से संतुष्ट हुए थे और हमे आगे बढने को कहा था । हम दोनो ने कच्छ युनिवर्सिटी में साहित्य अकादमी आयोजित 'कवि अनुवादक' कार्यक्रम में हमारी भाषा में इस काव्य का पाठ किया था । इस कार्यक्रम में दिग्गज उपस्थित रहे थे जैसे साहित्य साहित्य अकादमी, दिल्ली के सलाहकार समिति के कन्वीनर गुजराती के कवि विनोद जोशी, कच्छ युनिवर्सिटी

के वाइस चान्सेलर शशीरंजन यादव, विवेचक धीरेन्द्र महेता और गुजराती विभाग के अध्यक्ष दर्शना धोलकिया । यह यादगार अनुभव था । में यहाँ एक और बात कहना चाहता हूँ कि में खुश हूँ क्योंकि 'जलगीत' काव्य को Indian Litrecture के अभ्यासक्रम में कच्छ युनिवर्सिटी ने दाखिल किया है ।

बाद में रमणीक सोमेश्वर ने मेरा अकादमी पुरस्कृत काव्यसंग्रह 'I will not let time sleep' (२०१०) का गुजराती में अनुवाद किया, यह पुस्तक २३ भाषाओं में अनूदित हूई और साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित हूई । में गुजराती वाचको के सामने प्रस्तुत करने के लिए रमणीक सोमेश्वर का आभारी हूँ ।

इस वक्त एक और व्यक्ति को में याद करना चाहता हूँ । डो. उर्वीश वसावडा व्यवसाय सें Rediologist हैं किन्तु अपनी रुचि से कवि है । उन्हों ने मेरे काव्य 'नानीलु' का गुजराती में अनुवाद किया है । वास्तव में उस वक्त में उनको पहेचानता नहीं था । लेकिन Internet से वो मेरे 'नानीलु' के परिचय में आये और तुरन्त उन्हों ने अनुवाद किया । इससे में बहुत खुश हुआ हूँ । काव्य स्वरूप 'नानीलु' के बारे में कुछ शब्द उचित होंगे । में ने यह नियत छंद करीब बीस साल पहेले सृजित किया था । यह छोटा काव्य नहीं है, यह हाईकु भी नहीं है । यह मेरी तेलुगु भाषा को बहुत योग्य हैं ।

इनमें चार पंक्ति है । पहली दो पंक्ति एक एकम है । दूसरी एकम या तो सामान्य या सहायक या पहली पंक्ति की टिप्पणी है । इसका मतलब है कि punch line दूसरी एकम में आती है । यह कवि की कल्पनाका hallmark है । शब्द की संख्या २०-२५ की बीच में होगी । भीतर की अनुभूति यह स्वरूप का सुषुप्त भाग है । समकालीन साहित्यक्षेत्र ने इस नये स्वरूप की योग्य कदर की है । अनेक अग्रज,

प्रयत्न है। यह किताब एक path-breaker है जिसे सभी भाषाओं को अनुकरण करना चाहिए और अन्य उल्लेखनीय समकालीन गुजराती कविता का अनुवाद का पुस्तक है 'Breath Becoming a word : contemporary poetry in Gujarati Translation (2010)' जो दिलीप झवेरी ने संपादित किया है और गुजरात साहित्य अकादमी ने प्रकाशित किया है । में स्वयं इस पुस्तक में से कुछ काव्य तेलुगु में अनूदित करने का विचार कर रहा हूं । मूझे लगता है कि यह परिषद फिरसे प्रयास करें और गुजराती और अन्य भाषाओं का आदान-प्रदान की नई वीथि Create करें । यही एक रास्ता तुम्हारी भाषाको महानता के राष्ट्रिय और वैश्विक स्तर पर प्रसारे यही आपके देशमें राष्ट्रिय अखंडता की पोषण सहाय करेगा ।

* * *

ગુજરાતી સાહિત્ય પરિષદ

૨૯મું જ્ઞાનસત્ર

શ્રી સર્વસાધારણ માનવ સેવા ટ્રસ્ટ, મગરવાડા
૨૩-૨૪-૨૫ ડિસેમ્બર-૨૦૧૬

અધ્યક્ષીય વક્તવ્ય

અનિલા દલાલ

'પ્રશિષ્ટ'ની વિભાવના વિશે થોડુંક....

'પ્રશિષ્ટ' સંજ્ઞાનું વિશ્લેષણ વૈવિધ્યસભર, ક્યારેક વિરોધી અર્થઘટનો નિર્દેશતું, ક્યારેક જુદી જુદી રીતિઓ દ્વારા સમજુતી આપતું સૂચિત થાય છે. આ સંજ્ઞાને વ્યાખ્યાયિત કરવાનું તેથી સંકુલ, અટપટું બને છે. સર્વસામાન્ય અર્થમાં 'પ્રશિષ્ટ' ઉત્તમ અથવા પ્રમાણભૂત સ્થાયી રસ ધરાવતી સાહિત્યિક કૃતિઓને નિર્દેશે છે; તે સાથે સાહિત્યિક વિકાસની ઊંચાઇ ધરાવતા યુગને પણ મૂકે છે. તેના રચયિતાઓ આદર્શ નમૂનારૂપ (models) લેખવામાં આવે છે, જેમના પ્રભાવને ઝીલી, અનુસરી પછીના સર્જકો પોતાની રચનાઓને સ્વકીય ઘાટ આપે છે. આ અર્થમાં સાહિત્યના ઈતિહાસનું જુદા જુદા તબક્કાઓમાં વિભાજન કરાય છે, જેમકે 'Classic ages', અન્ય નામ ધરાવતાં યુગો વગેરે. આ અર્થના અનુસંધાનમાં વિશિષ્ટ પ્રકારના સાહિત્ય સ્વરૂપો કરતાં ઉચ્ચ સાહિત્યિક સજ્જતા અને સિદ્ધિને કેન્દ્રમાં

રાખવામાં આવે છે; માન્ય થયેલી ઉત્તમ ગુણવત્તા ધરાવતી જુદા જુદા પ્રકારની કૃતિઓનો પણ સમાવેશ હોય છે, પછી ભલે તે કોઈ સાહિત્ય-સ્વરૂપમાં ઢાળવામાં આવેલી ન હોય. Arabian Nights કે ડાર્વિનની કોઈ કૃતિ, તેમજ 'Odyssey' અને 'Aeneid' બધાંનો સમાવેશ આ પ્રકારના 'classics' ના સંગ્રહમાં જોવા મળે છે.

'What is a classic ?' શીર્ષક ધરાવતાં પોતાના નિબંધમાં ટી.એસ. ઍલિયટે આ સંજ્ઞાને ઝીણવટથી વિશ્લેષિત કરી છે. 'પ્રશિષ્ટ'નો તેમનો આદર્શ ઘણો ઊંચો છે. 'પ્રશિષ્ટ'ને સમજાવવા ઍલિયટ પરિપકવતા/પ્રૌઢી (maturity) શબ્દ પ્રયોજે છે. એમને મતે કોઈપણ કૃતિને પ્રશિષ્ટ હોવા માટે ચાર પ્રકારની પરિપક્વતાની આવશ્યકતા છે : ચિત્તની, સમાજ-સંસ્કૃતિની, ભાષાની અને શૈલીની પરિપક્વતા. આ ચારે પરિપકવતાને એકબીજા સાથે ગૂંથીને ઍલિયટ તેમનાં મંતવ્યોની વાત કરે છે. પ્રશિષ્ટ સાહિત્યને એની પાછળ પોતાની ભાષાનો ઇતિહાસ અને અતીતનો વિવેચનાયુક્ત બોધ હોય છે. એ સમયની ભાષાની પરિપક્વતાનું અનુસંધાન તે સંતુલિત સંવાદી સમાજ-સંસ્કૃતિ સાથે કરે છે. તેમને મતે સર્જકતાની પ્રૌઢી વ્યાપક અર્થમાં ભૂતકાળની પ્રણાલી, વર્તમાનની મૌલિકતા અને વિશ્વજનીન (universal) સાર્થકતા વચ્ચેના સહજ સંતુલનની જાળવણીમાં છે. પ્રશિષ્ટ શૈલીની ગતિ એકવિધતા તરફથી કંઈક સંકુલ એવી વિવિધતા તરફની છે.

ઍલિયટ અંગ્રેજી સાહિત્યની વાત કરતાં જણાવે છે કે મધ્યકાલીન અંગ્રેજ કવિ ચૉસરમાં આ લક્ષણો ઘણે અંશે જોવા મળે છે, તો ઇટાલિયન કવિ દાન્તેમાં લગભગ પૂર્ણપણે જોઈ શકાય છે. અંગ્રેજીના રેનેસૉ -

પુનર્જાગરણ યુગમાં પ્રશિષ્ટનો આરંભ જોઇ શકાય, પણ એલિઝાબેથન યુગ પ્રશિષ્ટ યુગ નથી. શેક્સપિયરનાં આરંભથી અંત સુધીના નાટકોની ભાષા-શૈલીના વિકાસમાં તેમની પરિપક્વતા દેખાય છે; તેમણે અંગ્રેજી ભાષાને વધુ પરિષ્કૃત ભાવછટાઓ વ્યક્ત કરવા સમર્થ બનાવી છે. કૉન્ગ્રીવના નાટક 'Way of the World'માં સમાજની રીતભાત (manners) - સંસ્કૃતિની લાક્ષણિકતાઓની જે પરિપક્વતા છે તે શેક્સપિયરના કોઈ નાટકમાં નથી. આમ પ્રત્યેક યુગ જુદી જુદી પરિપક્વતા લઈને, અને પ્રત્યેક સર્જક કોઈ વિશેષ પ્રૌઢી લઈને આવે છે. અંગ્રેજીમાં ૧૮મી સદીને એક અર્થમાં પ્રશિષ્ટ યુગ ગણવામાં આવ્યો છે, જે Neo-classicism સંજ્ઞાથી ઓળખાય છે. (તે વિશે થોડી વાત આગળ ઉપર આવશે)

ઍલિયટની નજર વર્જિલ તરફ છે. ચિત્તની પરિપક્વતાને ઇતિહાસની ચેતનાની અને પોતાની પ્રજા ઉપરાંત બીજી પ્રજાનાં ઇતિહાસની ચેતનાની સંલગ્નતા જરૂરી છે. રોમન કવિ વર્જિલ પાસે આ ચેતના હતી; પોતાની ભાષાના પુરોગામીઓની જેમ જ ગ્રીક સાહિત્યની પ્રણાલી હતાં. એક સંસ્કૃતિનો બીજી સંસ્કૃતિ સંબંધમાં થતો વિકાસ/વિનિયોગ વર્જિલનાં મહાકાવ્ય 'ઇનીડ'ના વિષયને વિશિષ્ટતા બક્ષે છે. મહાકાવ્યનાં પાત્રો સ્થાનીય સીમાને અતિક્રમી રોમન તેમજ યુરોપિયન આચારસંહિતાને પ્રકટ કરે છે.

આમ મૂળે તો 'Classic' સંજ્ઞા ગ્રીક અને રોમન સાહિત્યકલા સાથે જોડાયેલી છે. પ્રાચીનકાળના ગ્રીક અને રોમન સર્જકોએ પ્રમાણભૂત નમૂનારૂપ કૃતિઓ આપેલી છે તે 'Classic' ગણાય છે. Aeschylus, Sophocles, Euripides - એ ત્રણ મોટા tragedians એ

પ્રાચીનકાળમાં પોતાનાં નાટકોનાં સર્જનથી ગૌરવભર્યું સ્થાન અને પ્રતિષ્ઠા પ્રાપ્ત કર્યાં હતાં. આજે પણ કંઈક અંશે એ અર્થ અસ્તિત્વમાં રહ્યો છે. આધુનિકોએ તેમને બિરદાવ્યા છે. મેથ્યુ આર્નોલ્ડે Sophocles માટે ઉચ્ચારેલ શબ્દો યાદ આવે. તે કહે છે :

One (S),
Who saw life steadily and saw it whole
The mellow glory of the attic stage ....

આધુનિક સાહિત્યમાં ગ્રીક અને રોમન કથાવસ્તુને અનુસરવાનું વલણ છે, તો કેટલીકવાર સાહિત્ય-સ્વરૂપોને (Epic, Tragedy) પોતાની રીતે ઢાળવામાં આવે છે. પોતપોતાના દેશની ભાષાના સાહિત્યમાં આ વિષયોનું, ગ્રીક-રોમન myths અને legendsનું રૂપાંતરણ કરવામાં આવ્યું છે. અહીં સ્વરૂપને પ્રાધાન્ય ન આપતાં માત્ર વિષયો જ ઉપાડ્યા છે. ટી.એસ. એલિયટના 'The Waste Land' માં આ વલણનું નોંધપાત્ર ઉદાહરણ મળે છે. તે જ રીતે જેમ્સ જોય્યસની નવલકથા 'Ulysses'માં પણ આ વિનિયોગ સાંપડે છે. અમેરિકન નાટ્યકાર Eugene O'Neill ના એક નાટકનું શીર્ષક જ છે. 'Mourning becomes Electra.' ૨૦મી સદીમાં (૧૯મી ના ઉત્તરાર્ધથી...) નૃવંશશાસ્ત્ર, માનસશાસ્ત્ર મનોવિશ્લેષણશાસ્ત્રમાં આ અસર સ્પષ્ટ દેખાય છે. ફ્રોઈડે ગ્રંથિઓથી પીડાતી વ્યક્તિઓ સાથે ગ્રીક પૌરાણિક નામો જોડયાં છે : Oedipus Complex, Electra Complex etc. બીજી તરફ કૃતિની રચના ગૂંથણી અને રચનારીતિ માટે ગ્રીક-રોમન કાવ્યશાસ્ત્રનાં સિદ્ધાંતોને અનુસર્યા છે. બે મહત્ત્વના સ્રોત છે : ઍરિસ્ટોટલના 'Poetics' માંથી Theory of

Imitation લેવાઈ છે, અને Tragedy તેમજ Epic જેવાં સાહિત્ય સ્વરૂપોને યુરોપની ભાષાઓના સાહિત્યમાં ૧૫મી ૧૬મી સદીમાં પ્રાધાન્ય મળ્યું છે. બીજો સ્રોત ને Horaceનું 'Art of Poetry.' રચનામાં ઔચિત્યના સિદ્ધાંતનો (Propriety) મહિમા કર્યો છે. કૃતિની રચનામાં પાત્રને અનુરૂપ ભાષા અને વિષયને અનુરૂપ સ્વરૂપ વગેરે બાબતોમાં ઔચિત્યનો સિદ્ધાંત ખપમાં લેવાયો છે.

અંગ્રેજી સાહિત્યના રેનેસૉં યુગમાં આ પ્રભાવને પડકારવામાં આવ્યો છે. સર ફિલિપ સિડ્નીના Apology for Poetryમાં તે પ્રકટ થાય છે. ઍલિઝાબેથન નાટ્યકારો જાણે બંધનો તોડી મુક્તિનો romantic ઉલ્લાસ માણે છે. પરંતુ આ ઉભરો શમી જાય છે, એક repose - શાંતતા પ્રવર્તે છે, અને Neo-classicismને માર્ગ મળે છે. Classicism અને Romanticismના આવા ચડાવ ઉતાર યુરોપની અન્ય ભાષાઓનાં સાહિત્યમાં પણ જોવા મળે છે. અંગ્રેજી પૂરતી વાત કરીએ તો ફરીથી પૂર્વસૂરિઓનું આધિપત્ય, નિયમબદ્ધતા, તર્કસંગતતાનું પાલન થાય છે. ઍલેકઝાન્ડર પોપ, ડ્રાયડન વગેરે આના પુરસ્કર્તા છે. જોકે આ Classicists ગ્રીક પૂર્વસૂરિઓનાં બાહ્યરંગને જ ઝીલી શકે છે, તેની અંતરંગતા પામી શકતા નથી, અને લોલક Romanticismના બીજે છેડે પહોંચી જાય છે - ૧૮મી સદીના અંતભાગમાં નવાં સ્વરૂપોની શોધ, Longinusની Sublimeની વિભાવનાની અસર, મૌલિક વ્યક્તિગત (individualistic) કાવ્યશાસ્ત્ર, creativity - સર્જકતાની ઓળખ - આ તત્ત્વો આ romantic વલણને પ્રોત્સાહિત કરે છે.

જર્મન ભાષામાં વ્યક્તિગત કાવ્યશાસ્ત્રની આ romantic

વિભાવનાને classicism/classical ની સ્વરૂપ પ્રધાનતા, સ્વસ્થતા અને પરંપરાની જાળવણી દ્વારા નિયંત્રિત કરવામાં આવી છે. Goethe, Schiller વગેરે લેખકો classicની વિભાવનાને નવું પરિમાણ, અર્થઘટન આપી મૌલિક રીતે પ્રયોજે છે. વીસમી સદીમાં ટી.એસ. એલિયટ કાવ્યનાં સ્વરૂપ, સભાન રચનાકૌશલ, કાવ્યરીતિ પર ભાર મૂકી, વ્યક્તિગત સંવેદનો અને પ્રેરણાના romantic ખ્યાલને પડકારે છે; આ અર્થમાં તે classicist રહે છે.

*

ભારતીય સાહિત્ય વિશે થોડી વાત કરીએ. પ્રાચીન કાવ્યમાં ભારતીય આલંકારિકોએ પણ કાવ્યની ઉત્તમતા (excellenee) કે પ્રશિષ્ટતા મૂલવવા કાવ્યશાસ્ત્ર આપ્યું છે. Aristotleના Poeticsની જેમ. દૃષ્ટિબિંદુઓ જુદા હોવા છતાં થોડું સામ્ય જોઈ શકાય છે. આપણાં આલંકારિકોએ પ્રમાણભૂતતા અને શ્રેષ્ઠતાના પોતાના માનદંડો સ્થાપિત કર્યા છે જુદા જુદા પ્રકારથી: જેમ કે અલંકારવાદ, રચનારીતિવાદ અથવા શૈલીવાદ, ઔચિત્યવાદ વગેરે વગેરે. આ કાવ્યવિચાર આગળ વધતાં નિર્દેશે છે કે વાચ્યથી અતિરિક્ત એવો કાવ્યનો બીજો ધર્મ છે અને એ ધર્મ તે વ્યંજના, ધ્વનિ. વ્યંજના કાવ્યનો આત્મા છે અને એ વ્યંજના રસની છે - 'વાક્યં રસાત્મકં કાવ્યં.' અહીં રસસિદ્ધાંત કેન્દ્રમાં છે. સહૃદયના કાવ્યાનુશીલનથી જન્મેલી ચિત્તની અનુભૂતિવિશેષ તેનું નામ રસ. રસસિદ્ધ કરતી અને રસાનુભવ કરાવતી પ્રશિષ્ટ કૃતિઓનાં પ્રાચીન સંસ્કૃત સાહિત્યમાંથી ઘણાં ઉદાહરણો મળે છે. 'ઉત્તરરામચરિત' કે 'શાકુન્તલ'ના દૃષ્ટાંતો તો છે જ. 'પ્રશિષ્ટ'ને ભારતીય પ્રાચીનકાળના સાહિત્ય સંદર્ભે આ રીતે ઘટાવી શકાય છે.

મધ્યકાલીન ભારતીય સાહિત્યનાં મૂલ્યાંકનમાં સ્થાપિત માનદંડો કે ધોરણો સીધાં જ કામે લગાડી શકાય નહીં. તે સમયની ભૂમિકા જુદી છે, સામાજિક-સાંસ્કૃતિક પરિવેશ ભિન્ન પ્રકારનો હતો; સાહિત્યિક અભિવ્યક્તિનું માધ્યમ મોટે ભાગે બધી જ ભારતીય ભાષાઓમાં ભક્તિ હતું; તેનાં પ્રયોજનો અને હેતુઓ સમયની માગ પ્રમાણે હતા. વળી એ સાહિત્ય પરંપરાનુંસારી હોઈ તેમાં રૂઢિઓ (Conventions) અને પરંપરાઓ સમાવિષ્ટ હતી. મધ્યકાળમાં વિપુલ પ્રમાણમાં પ્રાપ્ત જૈન સાહિત્ય લગભગ સંસાર-વિરક્ત સાધુઓની રચનાઓ હોઈ, ઘણુંખરું તેમાં ધર્મબોધ લક્ષ્ય હતું. આ મધ્યકાળમાં આવું ચિત્ર હોવા છતાં કેટલીક 'પ્રશિષ્ટ', ઊંચી સાહિત્યિક વિશેષતા ધરાવતી રચનાઓ અને રચયિતાઓ મળે જ છે. કલિકાલ સર્વજ્ઞ હેમચંદ્રાચાર્ય તો પ્રશિષ્ટના ઉચ્ચ શિખરે શોભી રહ્યા છે. અને પછી

હતાં નરસિંહ ને મીરાં
ખરા ઇલ્મી ખરા શૂરા

'ઇલ્મી' કેટલું બધું કહી જાય છે !? જ્ઞાની કવિ અખાની ઉત્તમ કવિતામાં જ્ઞાન અને કાવ્યત્ત્વમાં કોઈ વિરોધ નથી, ભક્તો-સંતોની અનુભૂતિમાંથી 'પરા' વાણી ઉદ્‌ભવે છે, જે સહજતયા કવિતામાં શબ્દસ્થ થઈ, નિર્વાક્ અનુભૂતિ રચનામાં સવાક્ બની સિદ્ધકવિતા રૂપે ઉપસી આવે છે.

૧૯મી સદીના ઉત્તરાર્ધથી ભારતીય ભાષાઓનાં સાહિત્ય સર્જન પાશ્ચાત્ય, વિશેષે, અંગ્રેજી સાહિત્યનાં સ્વરૂપો, રીતિઓ, વિવેચન, વગેરેની અસર હેઠળ રચાય છે. સંસ્કૃતિ ભેદે 'પ્રશિષ્ટ'નાં માનદંડોમાં ભિન્નતા રહેવાની, તેમ છતાં મૂલ્યાંકનમાં Common pursuit - સામાન્ય

अनुज और नवोदित कविओने इस स्वरूप को ग्रहण किया और अब तक तेलुगु में 300 से ज्यादा 'नानीलु' के संग्रह प्रकाशित हुए है। वास्तव में तेलुगु विवेचक मुझे 'नानीलु' के पिता, नानीलु के सर्जनहार के रूप में संबोधित करते है। में कुछ 'नानीलु' कहना पसंद करुंगा।

1. The right hand
unburned at cremation
Reason ?
It holds the pen

2 Grieve not
For the broken earthen pot
The earth is preparihg
To shape a new

3 Languagc is
A drawing room parrot
Dialect ?
The kitchen flouour

आज में आपके सामने सिर्फ एक ही तेलुगु कवि हूँ जिसकी तीन किताब आपकी भाषा में अनूदित है।

अब गुजराती से तेलुगु भाषा में हुए काम को याद करें। कुछ गुजराती काव्यो यहाँ तेलुगु में अनूदित हुए और वहाँ भी हूए। वास्तव में मेंने रमणीक सोमेश्वर के कुछ काव्यो का तेलुगु में अनुवाद किया। नवलकथा में, पन्नालाल पटेल की नवलकथा 'मानवीनी

भवाई' वेमुरी अंजनेय शर्मा ने तेलुगु में अनूदित किए है। वे हिन्दी के विद्वान है। उन्हों ने गुजराती शब्दो की नोंध भाषान्तर में की है। आप सब जानते है कि इस नवलकथा को ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला है। तेलुगु नवलकथा का नाम है 'जीवितमें ओ नाटकम्' और यह National Book Trust ने प्रकाशित की है। A.M. Raphel की संपादित 'गुजराती की एकांकी' तेलुगु में 'गुजराती एकांकीकालु' नाम से दोनेपुडी राजा राव ने अनूदित की थी। एक ओर गुजराती किताब, यशवंत शुक्ल और अनिरुद्ध ब्रह्मभट्ट संपादित कहानी संग्रह टी. वेंकटचलम् द्वारा तेलुगु में 'कथाभारती - गुजराती कथालु' नामसे आई थी।

प्रसिद्ध गुजराती नारीवादी लेखिका कुन्दनिका कापडिया लिखित नवलकथा 'सात पगलां आकाशमां' आप अच्छी तरह से जानते है। नंदिनी महेता ने हिन्दी में अनूदित किया था और हिन्दी संस्कारण से Ycp Venkata Reddy - वेंकट रेड्डी तेलुगु में 'विमुक्ति' शीर्षक से लाए।

में यहाँ भारपूर्वक कहना चाहता हूँ कि साहित्य अकादमी और नेशनल बुक ट्रस्ट के बिना गुजराती - तेलुगु साहित्य का आदान-प्रदान शक्य नहीं हो सकता और इसलिए में उन्हें धन्यवाद देता हूँ। भारत जैसे बहुभाषी देश में, यह दो संस्थाने सभी समस्याए दूर की और विविध साहित्य को साथ में लाने में सफल हुए है। इसी वक्त, यह याद रखना जरुरी है कि हिन्दी भाषा ने ये अनुवादो करने में ब्रिज का बड़ा काम किया है।

में गुजराती साहित्य परिषद को उनकी साहित्य सेवा के लिए हृदय से अभिनंदन देना चाहता हूँ। २००५ में परिषद द्वारा प्रकाशित 'Beyind The Beaten Track' किताब एक असाधारण